फ्रांट्ज फैनन : भाषा हिंसा और उपनिवेशवाद

डॉ. शकील हुसैन
https://orcid.org/0000-0003-1491-6784

संक्षेप

यह शोध पत्र फैनन की दो पुस्तकों ब्लैक स्किन, व्हाइट मास्क और द व्रीच्ड ऑफ द अर्थ के माध्यम से उपनिवेशवाद की प्रकृति पर फैनन के विचारों का परीक्षण करने का प्रयास है । फैनन ने जिस प्रकार से उपनिवेशवाद की प्रकृति की व्याख्या की है और उससे मुक्ति का मार्ग बताया है उसमे उन्होने दो तत्वों को उन्होंने बहुत प्रधानता दी है । मनोवैज्ञानिक स्तर पर उपनिवेशवाद को व्याख्यायित करने में उन्होंने भाषा को बहुत अधिक महत्व दिया है । उपनिवेशवाद को स्थापित करने उसे बनाए रखना और उससे मुक्ति के बाहर के रूप में हिंसा को बहुत अधिक महत्व दिया है । इन दोनों पुस्तकों में फैनन के राजनीतिक संरचना पर उनके विचारों को समझने की कोशिश की गई है एक व्यवहारवादी क्रांतिकारी होने के बाद भी मार्क्सवादी सिद्धांतों के प्रति उनकी निष्ठा काम नहीं हुई और मार्क्सवाद को उन्होंने परिवर्तन के आधार के रूप में भी स्वीकार किया। उनका मुख्य योगदान भाषा और संस्कृति के पारस्परिक संबंध के माध्यम से उपनिवेशवाद को समझने में है ।

प्रमुख शब्दावली : आर्थिक पद्धति, भाषा, उपनिवेशवाद समाजवाद मूलनिवासी, उपनिवेशवादी, हिंसा, राष्ट्रीयमुक्ति।

मूल स्त्रोत : ब्लैक स्किन, व्हाइट मास्क और द व्रीच्ड ऑफ द अर्थ ।

पद्धति वक्तव्य : निगमनात्मक पद्धतिनुरूप फ्रांट्ज फैनन के मूल ग्रन्थो का अध्यान कर निष्कर्ष निकालने का प्रयत्न किया गया है तदनुकूल तुलनात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है।

सहायक प्रध्यापक, राजनीति विज्ञान
शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्वशासी महाविद्यालय , दुर्ग, छत्तीसगढ़ । 8319735275
shakeelvns27@gmail.com

प्रस्तावना

फ्रांसीसी उपनिवेश मार्टीनिक द्वीप पर जन्मे, फ्रांट्ज उमर फैनन (**1925–1961**) उपनिवेशवाद ब्लैक अटलांटिक सिद्धांत के मार्क्सवादी चिंतक हैं । मार्क्स और मार्क्सवादी सिद्धांतों के प्रति उनकी निष्ठा लेनिन , स्टालिन और माओ जैसे क्रांतिकारी मार्क्सवादियों की अपेक्षाअधिक है । उन्होंने मार्क्सवाद को सामाजिक परिवर्तन के एक सिद्धांत के रूप में लिया और उसकी क्रांतिकारी प्रकृति को सामाजिक परिवर्तन और उपनिवेशवाद से मुक्ति का आधार बनाया । मात्र **36** साल की अल्पायू में ही दुनिया छोड़ देने वाले फैनन ने कविता, मनोविज्ञान, दर्शन, और राजनीतिक सिद्धांत के माध्यम से राजनीतिक चिंतन पर गहरी छाप छोड़ी । उनके जीवन काल में उनकी दो मूल कृतियां **1952** में ब्लैक स्किन, व्हाइट मास्क (प्यू नोयर, मास्क ब्लैंक्स) और **1961** में द व्रीच्ड ऑफ द अर्थ (लेस डैमनेस डे ला टेरे)।प्रकाशित हुई जिन्होंने उनको एक चिंतक के रूप में स्थापित किया जिसने पहली किताब दार्शनिक रूप से अधिक समृद्ध है । भाषा, प्रभाव, कामुकता, लिंगभेद, नस्ल और नस्ल भेद,धार्मिकता, अलगाव (एलिएनेशन) सामाजिक हीनता और सामाजिक परिवर्तन आदि उनके चिंतन केमहत्वपूर्ण विषय है । एक मनोचिकित्सक होने के नाते उन्होंने उपनिवेशवाद और उससे मुक्ति पर एक राजनीति शास्त्री की तुलना में एक मनोवैज्ञानिक के रूप में अधिक महत्वपूर्ण विवेचन दिया है । उनकी पहली किताब ब्लैक स्क्रीन व्हाइट मास्क दार्शनिक रूप से अधिक समृद्ध है जिसमें वह बताते हैं कि रंग जैसी वस्तु जैसी वस्तु किस प्रकार अलगाववाद का आधार बनती है, किस प्रकार रंग और नस्ल श्रेष्ठता और हीनता का आधार बनते हैं । यह यह हीनता और श्रेष्ठता अलगाववाद का आधार बनती है । यह मिथ्या चेतना उपनिवेशवाद एक स्वीकार्य स्थिति में ले आती है । इस हीनता की मिथ्या चेतना से मुक्ति का मार्ग फैनन हिंसा के रूप में देखते हैं । इस प्रकार संक्षेप में फैनन का चिंतन एक क्रमबद्ध चिंतन है बावजूद इसके कि उनन की किताबों में उनके विचार यत्र तत्र फैले हुए हैं । मार्क्स और एंगेल्स या लेनिन की जैसे उन्होंने बहुत क्रमबद्ध दार्शनिक चिंतन नहीं दिया है । बल्कि वह समस्याओं और चर्चाओं के माध्यम से अपनी बात रखते हैं जैसे कालेपन की समस्या, भाषा की समस्या, पर संस्कृति की श्रेष्ठ की समस्या, आदि के माध्यम से वह एक गंभीर चिंतन प्रस्तुत करते हैं इसके मूल में सामाजिक परिवर्तन, राष्ट्रीय मुक्ति है जिसका आधार और साधन हिंसा है जो कि उनकी एक महत्वपूर्ण आलोचना बनती है । हिंसा के प्रति उनकी कट्टरता उनके चिंतन को अपेक्षाकृत कम महत्वपूर्ण बना देती है लेकिन वह एक उत्कट दार्शनिक नहीं बल्कि एक उत्कट सामाजिक क्रियाविद के जैसे सामने आते हैं जो केवल बात नहीं करता बल्कि इस बात को लागू करने की कोशिश करता है ।

हाइपोथिसिस

- भाषायी, नस्लीय, रंगजनित हीनता वह मिथ्या चेतन है जो उपनिवेशवाद को स्वीकार्य बनाती है । अलगाववाद की अस्तित्ववादी चेतना मुक्ति की ओर ले जाती है ।

- उपनिवेशवाद अपनी प्रकृति में सत्तावादी और बाजारवादी है जो हिंसा के द्वारा बनी रहती है ।
- उपनिवेशवाद से मुक्ति का मार्ग राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन है और हिंसा उसका सर्वाधिक प्रमुख उपकरण है ।

अलगाववाद की अस्तित्ववादी चेतना

फैनन मार्क्स के सुपरस्ट्रक्चर की अवधारणा से पूरी तरह सहमत है । मार्क्स की भांति वह भी मानते थे कि राज्य संस्कृति, साहित्य,दर्शन, सेना, पुलिस, कानून आदि की सहायता से सुपरस्ट्रक्चर का रूप ले लेता है और इस सुपरस्ट्रक्चर की सहायता से बना रहता है तथा शोषण चक्र चलता रहता है ।

"यूरोपीय अभिजात वर्ग ने एक मूल अभिजात वर्ग का निर्माण करने का बीड़ा उठाया। उन्होंने होनहार किशोरों को चुनाय उन्होंने उन्हें पश्चिमी संस्कृति के सिद्धांतों के साथ लाल–गर्म लोहे से दाग दियाय उन्होंने उनके मुँह को ऊँची आवाज वाले वाक्यांशों, बड़े–बड़े चिपचिपे शब्दों से भर दिया जो दाँतों से चिपक जाते थे। " (फैनन **1952** पृ **07**)

फैनन के अनुसार उपनिवेशवादी ताकतें भी इसी प्रकार के सुपरस्टार का सहारा लेती हैं जिससे उनके उपनिवेश कायम रहे और उनका शोषण चला रहे । इसमें वह भाषा को बहुत अधिक महत्व देते हैं । उनके अनुसार भाषा संप्रेषण और अभिव्यक्ति का साधन है किंतु उपन्यासवादी ताकतें भाषा को एक उपकरण के रूप में इस्तेमाल करते हैं वे मूल निवासियो की भाषा को हीन भावना से देखते हैं। अपनी भाषायी श्रेष्ठता स्थापित करते है । औपनिवेषिक भाषा फले फूले इसके लिए वे अपनी भाषा को आपकी भाषा बना देते हैं सरकारी कामकाज और अदालत की भाषा बना देते हैं । परिणाम स्वरूप सरकारी कामकाज के लिए उन्हें है उसी भाषा में एक बड़े कर्मचारी वर्ग की आवश्यकता होती है दूसरे शब्दों में भी भाषा को रोजगार और अभिजात्यता को भी जोड़ देते हैं । अतः औपनिवेशिक भाषा में शिक्षा व्यवस्था प्रारंभ करते हैं इस प्रकार में धीरे–धीरे प्रजाति और भाषाई श्रेष्ठ स्थापित करते हैं और लोगों को उनकी सभ्यता और संस्कृति से भी पृथक कर हीन भावना भर देते है ।

" बोलने (भाषा) का मतलब है एक निश्चित वाक्यविन्यास का उपयोग करने की स्थिति में होना, इस या उस भाषा की रूपरेखा को समझना, लेकिन इसका मतलब सबसे ऊपर एक संस्कृति को ग्रहण करना, समर्थन करना है " । (फैनन **1952** पृ **17**)

फलतः मूल निवासी गेरे प्रवासियों जैसा दिखना चाहता है उन्ही के जैसे कपड़े पहनता है उन्हीं की भाषा में बातें करना चाहता है । "यूरोप अपने मिशन में विश्वास कर सकता थाय उसने एशियाई लोगों को हेलेनाइज किया थाय उसने एक नई नस्ल, ग्रीको–लैटिन नीग्रो का निर्माण किया था।३ उनकी नाक के सामने गाजर रखना ही काफी है, वे ठीक से सरपट दौड़ेंगे। विद्रोह के बारे में हमें बिल्कुल भी चिंता करने की जरूरत नहीं हैय कोई भी समझदार देशी यूरोप के सुंदर बेटों की तरह सिर्फ यूरोपीय बनने के लिए निकल पड़ेगा ।

(फैनन **1952** पृ**08**)

एक नीग्रो महिला गोरे फ्रांसीसी का सपना देखती हैं एक नीग्रो पुरुष एक गोरी फ्रेंच महिला के संसर्ग का सपना देखता है। एक नीग्रो इस स्वप्न में गौरव की अनुसूची करता है कि वह वह गोरे फ्रांसीसी की भांति पेरिस मे

भ्रमण कर रहा है और उन सब सुविधाओं का भोग कर रहा है जो गोरे फ्रांसीसियों को उपलब्ध हैं । वह अपने मूल भाषा की तुलना में फ्रांसीसी सीखने को अधिक महत्व देता है और उनके जैसे आचरण करना चाहता है । जैसाकि फैनन लिखते है –

" मैं भाषा की घटना को एक बुनियादी महत्व देता हूँ। इसलिए मुझे इस विषय से शुरू करना जरूरी लगता है, जो हमें रंगीन आदमी की दूसरे के आयाम की समझ में एक तत्व प्रदान करेगा। क्योंकि यह निहित है कि बोलना दूसरे के लिए पूरी तरह से मौजूद होना है। काले आदमी के दो आयाम हैं। एक अपने साथियों के साथ, दूसरा गोरे आदमी के साथ। एक नीग्रो एक गोरे आदमी के साथ और दूसरे नीग्रो के साथ अलग तरह से व्यवहार करता है। यह आत्म–विभाजन उपनिवेशवादी अधीनता का प्रत्यक्ष परिणाम है, इसमें कोई संदेह नहीं है... कोई भी इस बात पर संदेह करने का सपना नहीं देख सकता " (फैनन **1952** पृ **17**)

उपनिवेशवाद अपने विभिन्न सुपरस्ट्रक्चर वाले उपकरणो के माध्यम से यह स्थापित करने की कोशिश करता है कि उपनिवेशों के मूल निवासी काले लोगों का अपना कुछ भी नहीं है । " सामान्त तौर पर हमारे दौर के सबसे शानदार धोखे गढ़े गए है । " (फैनन पृ **211**)

उनका संपूर्ण अस्तित्व दूसरे के अस्तित्व पर निर्भर है यहां पर फैनन के चिंतन में सार्त्र के अस्तित्ववाद का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है , और वह अस्तित्ववाद का सहारा लेते हैं । उपनिवेशवाद यह स्थापित करने का प्रयत्न करता है कि मूल निवासियों का अस्तित्व वास्तव में गोरे लोगों की अस्तित्व पर निर्भर है । उनकी भाषा, सभ्यता, संस्कृति उनका संपूर्ण अस्तित्व दोयम दर्जे का है । उसका लक्ष्य है अपने मालिकों के अस्तित्व जैसी स्थिति तक पहुंचाना । जैसा कि फैनन कहते हैं

" नीग्रो ३वह लगातार आत्म–मूल्यांकन और अहंकार–आदर्श में व्यस्त रहता है। जब भी वह किसी और के संपर्क में आता है, तो मूल्य, योग्यता का सवाल उठता है। एंटिलियन के पास अपने स्वयं के कोई अंतर्निहित मूल्य नहीं हैं, वे हमेशा दूसरे की उपस्थिति पर निर्भर होते हैं। सवाल हमेशा यह होता है कि क्या वह मुझसे कम बुद्धिमान है, मुझसे अधिक काला है, मुझसे कम सम्माननीय है। किसी की अपनी हर स्थिति, सुरक्षा का हर प्रयास, निर्भरता के संबंधों पर आधारित है, दूसरे की कमी के साथ। यह मेरे चारों ओर जो कुछ भी है उसका मलबा है " (फैनन **1952** पृ **211**)

समाजशास्त्री भाषा में संस्कृतिकरण या अकलचराइजेशन की तीव्र गति उपनिवेशवाद को स्वीकार्य तो बनाती है लेकिन अवचेतन मे अलगाववाद को भी बढ़ाती है । फैनन अलगाववाद को आवश्यक भी मानते हैं और स्पष्ट रूप से कहते हैं की स्वतंत्रता के लिए अलगाव के प्रयास की जरूरत होती है यह अलगाव ही उसे अपने मुक्ति के लक्ष्य की ओर ले जाता है । इस अलगाववादी चेतना के जाग्रत होने के लिए पैनल अस्तित्व वादी चेतनापुर आवश्यक मानते हैं उनकी दृष्टि में अपने सिद्ध के प्रति निरपेक्षता की चेतना निगम में यह भावना स्थापित करने की कोई स्थापित करती है कि वह उसकी उसका अस्तित्व किसी उपनिवेशवादी मलिक या गोरे फ्रांसीसी पर निर्भर नहीं है फ्रांसीसी भाषा में नहीं पड़ता अभिनता की स्थिति को पार कर जाती है और वह यह सोचकर पर विवश होता है की फ्रांसीसी भाषा में नहीं पड़ता बताइए सचेतन नीग्रो जो अलगाववाद की चेतना से जागृत होता

है वह उपनिवेशवाद से भी अलगाव को महसूस करता है प्रति वास्तविक चेतन क्यों लौटता है जैसा कि फाइनेंस लिखते हैं कि

" मैं दूसरे की आँखों में प्रशंसा पढ़ने की कोशिश करता हूँ, और अगर, दुर्भाग्य से, वे आँखें मुझे एक अप्रिय प्रतिबिंब दिखाती हैं, तो मुझे वह दर्पण दोषपूर्ण लगता हैः निस्संदेह वह दूसरा मूर्ख है। ३मैं खुद को पूर्ण मानता हूँ (पूर्णता की इच्छा) और मैं किसी विभाजन को नहीं मानता। दूसरा केवल इसे प्रस्तुत करने के लिए मंच पर आता है। मैं नायक हूँ। प्रशंसा करें या निंदा करें, इससे मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता, मैं ध्यान का केंद्र हूँ। अगर कोई दूसरा मुझे अपनी मूल्यवानता (अपनी कल्पना) की इच्छा से असहज करना चाहता है, तो मैं उसे बिना किसी परीक्षण के निर्वासित कर देता हूँ। उसका अस्तित्व समाप्त हो जाता है। मैं उस व्यक्ति के बारे में सुनना नहीं चाहता। मैं वस्तु के प्रभाव का अनुभव नहीं करना चाहता। वस्तु के साथ संपर्क का अर्थ है संघर्ष। " (फैनन **1952** पृ **212**)

फैनन के अनुसार शादी गुलामी का आधार मनोवैज्ञानिक है और उससे मुक्ति का मार्ग भी मनोवैज्ञानिक है । गुलामी के आधार में हीनता और परसंस्कृति की श्रेष्ठता की मिथ्या चेतना महत्वपूर्ण है । " हीनता की भावना एक एंटीलियन विशेषता है। यह केवल यह या वह एंटीलियन नहीं है जो न्यूरोटिक गठन का प्रतीक है, बल्कि सभी एंटीलियन हैं। एंटीलियन समाज एक न्यूरोटिक समाज है, एक ''तुलना'' का समाज। इसलिए हम व्यक्ति से वापस सामाजिक संरचना की ओर चले जाते हैं। यदि कोई दाग है, तो वह व्यक्ति की ''आत्मा'' में नहीं बल्कि पर्यावरण में है।" (फैनन **1952** पृ **214**)

इसके मुक्ति का मार्ग है हीनता की मिथ्या चेतना से अलगाववाद । इस प्रकार फैनन के चिंतन में अलगाववाद उसकी आत्म चेतना की जागृति के लिए जरूरी है। जैसा कि वह कहते हैं की स्वतंत्रता के लिए अलगाववादी चेतना आवश्यक है । अतः अलगाववादी चेतना उसके स्वचेतन को जागृत करने का साधन बन जाती है और जब यह चेतन जागृत होता है तब वह मुक्ति के मार्ग की ओर भौतिक रूप से अग्रसर होता है और राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन की शुरुआत होती है ।

" जब कोई इसे समझ लेता है, तो वह काम पूरा हो जाता है। फिर कोई उस आवाज के प्रति बहरा कैसे हो सकता है जो इतिहास के चरणों से गुजरती हैः ''जो मायने रखता है वह दुनिया को जानना नहीं है बल्कि इसे बदलना है।'' यह हमारे जीवनकाल में बहुत मायने रखता है।"

(फैनन **1952** पृ **17**) भजन के अनुसार जलगांव आदि सचेतनता मूल निवासियों की जागृति और उनकी मुक्ति के नेतृत्व आवश्यक है जब यह सचेतनता आ जाती है तो कोई भी बड़ा कोई भी रुकावट उसकी मुक्ति के मार्ग को बातचीत नहीं कर पाते

उपनिवेशवाद अपनी प्रकृति में सत्तावादी है जो हिंसा के द्वारा बना रहता है

उपनिवेशवाद की स्थापना के समबन्ध मे फैनन हाब्सन और लेनिन के विश्लेषण से काफी हद तक सहमत हैं । किंतु उन्होंने लेनिन जैसे निष्कर्ष नही निकाले । लेनिन ने औपनिवेशिक ताकतों के फल में फूलना के कारण की व्याख्या करने के लिए 'साम्राज्यवाद पूंजीवाद की उच्चतम अवस्था है" यह सिद्धांत स्थापित किया और उसके लिए उन्होंने उपनिवेशवाद के विकास को व्याख्या किया तथा यह बताया कि यूरोप की समृद्धि उपनिवेशो के कारण है । इस प्रकार लेनिन अपने सिद्धांत को सही साबित करने के लिए इतिहास वर्तमान से समर्थन प्राप्त कर रहे थे । लेकिन फैनन एक प्रकार से प्रत्याक्षवादी थे, वह जो देख रहे थे महसूस कर रहे थे उसी की व्याख्या कर रहे थे ना कि किए गए कार्य के लिए औचित्य बना रहे थे जैसे कि लेनिन में किया था । वह लेनिन की इस बात से सहमत थे कि यूरोप की समृद्धि उपनिवेशो के कारण है । उनके अनुसार यूरोपीय शक्तियों ने उपनिवेशो की स्थापना औद्योगिक उत्पादन के लिए पर्याप्त कच्चे माल की उपलब्धता की स्थापना के लिए की । " पूंजीवाद ने अपने शुरुआती दिनों में उपनिवेशों को कच्चे माल का एक स्रोत देखा" (फैनन **1952** पृ **40**)

17 वी **18**वीं में शताब्दी में लैटिन अमेरिका अफ्रीका और एशिया में इसी प्रकार के उपनिवेश स्थापित किए ।

1. फैनन अनुसार उपनिवेश हिंसा द्वारा स्थापित किए जाते है । यदि यह कहा जाए की फैनन का चिंतन मूल रूप से हिंसा के इर्द गिर्द घूमता है तो यह अतिशयोक्ति नहीं होगी । फैनन यह मानते हैं कि उपनिवेशो की स्थापना कच्चे माल के स्रोत के रूप में की गई है किन्तु उसे शक्ति के दम पर हिंसा के द्वारा स्थापित किया गया है । इसके लिए व्यापक रूप से हिंसा की गई ऐसी हिंसा जिसमें कोई नैतिकता नहीं होती ।

"हमें यह स्वीकार करने का साहस करना चाहिए कि वह मूल्यों का दुश्मन है, और इस अर्थ में वह पूर्णतः दुष्ट है। वह संक्षारक तत्व है, जो अपने निकट आने वाली हर चीज को नष्ट कर देता हैय वह विकृत करने वाला तत्व है, जो सुंदरता या नैतिकता से जुड़ी हर चीज को विकृत कर देता हैय वह दुष्ट शक्तियों का भण्डार है, अंधी ताकतों का अचेतन और अपरिवर्तनीय साधन है।" (फैनन **1961** पृ **41**)

2. उपनिवेश हिंसा द्वारा ही बनाए रखे जाते है औपनिवेशिक ताकतें के बलपूर्वक और नग्न हिंसा के दम पर उपनिवेशों को बनाए रखती है। " मूल निवासी की पीठ दीवार से सटी हुई है, चाकू उसके गले पर है (या, अधिक सटीक रूप से, उसके जननांगों पर इलेक्ट्रोड): उसके पास अपनी कल्पनाओं के लिए कोई आवाज नहीं होगी।" (फैनन **1961** पृ **97**)उनके लिए उपनिवेश और मूल निवासी कच्चे कच्चे माल से अधिक कुछ नहीं है उनमे कोई मानवता नहीं है कोई नैतिकता नहीं है और हिंसा के द्वारा शासन करते हैं।

"औपनिवेशिक दुनिया दो भागों में विभाजित दुनिया है। उपनिवेशों में पुलिसकर्मी और सैनिक ही आधिकारिक, स्थापित मध्यस्थ, बसने वाले और उसके उत्पीड़न के शासन के प्रवक्ता होते हैं। ३औपनिवेशिक देशों में,

पुलिसकर्मी और सैनिक अपनी तत्काल उपस्थिति और अपनी लगातार और प्रत्यक्ष कार्रवाई से मूल निवासी के साथ संपर्क बनाए रखते हैं और उसे राइफल बट और नेपलम के माध्यम से न हिलने की सलाह देते हैं। यहाँ यह स्पष्ट है कि सरकार के एजेंट शुद्ध बल की भाषा बोलते हैं। मध्यस्थ उत्पीड़न को कम नहीं करता है, न ही वर्चस्व को छिपाने की कोशिश करता है " (फैनन **1961** पृ **38**)

जिस क्षेत्र में मूल निवासी रहते हैं वह उस क्षेत्र का पूरक नहीं है जहाँ बसने वाले रहते हैं। दोनों क्षेत्र विरोधी हैं ।

राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन और हिंसा

फैनन के अनुसार उपनिवेश हिंसा के द्वारा स्थापित किए जाते हैं हिंसा के द्वारा ही उन्हें बनाए रखा जाता है और हिंसा द्वारा ही इनसे मुक्ति भी मिलती है । मार्क्स के सुपर स्ट्रक्चर की अवधारणा से सहमत होने के बावजूद राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन रा स्वतंत्रता के लिए कोई दार्शनिक आडंबर नहीं करते । लेकिन फिर भी वे एंजिल्स की मिडवाइफ थीसिस से जरूर प्रभावित है । जैसा कि सार्त्र ने भी लिखा है कि –

"यदि हम सोरेल की फासीवादी हिंसा के विचारों को अपवाद मान लें, तो एंगेल्स के पश्चात फैनन ही ऐसा व्यक्ति है जिसने क्रांति की दाई (मिडवाइफ) अर्थात हिंसा की ओर हमारा ध्यान एकाग्रता से आकर्षित किया। " (फैनन **1961** पृ **14**)

गुलामी से मुक्ति के लिए एक प्रसाद वेदना आवश्यक है लेकिन मार्क्स व एंगल्स यह प्रसव वेदना पूंजीवाद के उच्चतम विकास के रूप में देखते हैं अर्थात क्रांति रूपी शिशु के जन्म के लिए पूंजीवादी के विकास की प्रसव वेदना आवश्यक है । लेकिन फैनन के लिए पैसे किसी विकास की आवश्यकता नहीं है बल्कि यह प्रसव वेदना उनके लिए हिंसा है । क्योंकि यह हिंसा ही है जो अपने समय हर तरीके से मूल निवासियों के सामने परोसी जाती है, इस हिंसा के वे आदी हो जाते हैं और अंततः यह हिंसा ही उनकी मुक्ति का मार्ग बनती है ।

" हिंसा जिसने औपनिवेशिक दुनिया के क्रम पर शासन किया है, जिसने देशी सामाजिक रूपों के विनाश के लिए निरंतर ताल बजाई है और अर्थव्यवस्था के संदर्भ की प्रणालियों, पोशाक के रीति–रिवाजों और बाहरी जीवन को बिना किसी आरक्षण के तोड़ दिया है, वही हिंसा उस समय देशी द्वारा दावा की जाएगी और उस पर कब्जा कर लिया जाएगा, जब वह अपने व्यक्तित्व में इतिहास को मूर्त रूप देने का फैसला करता है, निषिद्ध तिमाहियों में बढ़ता है। औपनिवेशिक दुनिया को नष्ट करना अब से कार्रवाई की एक मानसिक तस्वीर है" (फैनन **1961** पृ **40**)

फैनन यद्यपि प्रसव वेदना की सिद्धान्त को स्वीकार नही करते लेकिन वह ये जरूर मानते है कि उपनिवेशो का रूपान्तर कच्चे माल के खदान से उपभोक्तावादी बाजार के रूप मे हो जाता है जो उनमे राष्ट्रीय मुक्ति की चेतना जागृत करने मे सहायक होता है ।

" पूंजीवाद ने अपने शुरुआती दिनों में उपनिवेशों को कच्चे माल का एक स्रोत देखा, जो एक बार निर्मित माल में बदल जाने के बाद यूरोपीय बाजार में वितरित किया जा सकता था। पूंजी के संचय के एक चरण के बाद,

पूंजीवाद आज एक वाणिज्यिक उद्यम की लाभ कमाने की क्षमता की अपनी अवधारणा को संशोधित करने के लिए आया है। उपनिवेश एक बाजार बन गए हैं। औपनिवेशिक आबादी एक ग्राहक है जो सामान खरीदने के लिए तैयार हैयपरिणामस्वरूप,, यदि क्रय–विक्रय में कमी आती है, तो स्पष्ट प्रमाण है कि सैन्य बल का समाधान अलग रखा जाना जाता है । " (फैनन **1961** पृ **65**)

देशीय बुर्जुआ से साठगांठ

मूल निवासियो मे मुक्ति के प्रति जागृति और स्वतंत्रता प्रेम देखकर औपनिवेशवादी ताकतें भाषायी उपकरण से तैयार देशीय बुर्जुआ का सहारा लेता है ।

"उपनिवेशीकरण की अवधि के दौरान, कुछ उपनिवेशित बुद्धिजीवियों ने उपनिवेशवादी देश के पूंजीपति वर्ग के साथ संवाद शुरू कर दिया है, मुक्ति की अवधि के दौरान, उपनिवेशवादी पूंजीपति वर्ग अभिजात वर्ग के साथ संपर्क की उत्सुकता से तलाश करता है ३बौद्धिक वर्ग इस बात के लिए संघर्ष करता है कि बसने वाले और देशवासी एक नई दुनिया में शांति से साथ रहें। लेकिन जो नहीं देख पाते है कि उपनिवेशवादी, सह–अस्तित्व में रहने में कोई दिलचस्पी नहीं रखता है। " (फैनन **1961** पृ **41**)

हिंसा का महत्व

फैनन हिंसा को राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन का सबसे अनिवार्य उपकरण मानते है । उनकी मान्यता है कि हिंसा के द्वारा ही राष्ट्रीय मुक्ति संभव है क्योंकि हिंसा के द्वारा ही मूल निवासियों को गुलाम बनाया जाता है । सह अस्तित्व की की सभी अवधारणाएं केवल गुलामी को बनाए रखने का तर्क होती है । क्योंकि गुलाम और उपनिवेशवादी दोनों की मूल प्रकृति में अंतर है दोनों के उद्देश्यो में अंतर है दोनों के रंगों और नस्लॅ में अंतर है । दोनों का सह अस्तित्व स्वीकार करना गुलामी को स्वीकार करने जैसा है । औपनिवेशिक और मूल निवासी उनका पहला सामना हिंसा से चिह्नित था और उनका एक साथ अस्तित्व, असम्भव है ।

"आप किसी भी समाज को, चाहे वह कितना भी आदिम क्यों न हो, ऐसे कार्यक्रम से उलट–पुलट नहीं कर सकते, यदि आपने शुरू से ही यह तय नहीं कर लिया है कि उसकी प्रेरक शक्ति हिंसा के लिए तैयार रहना है। जन्म से ही उसे यह स्पष्ट है कि निषेधों से भरी इस संकीर्ण दुनिया पर केवल पूर्ण हिंसा से ही सवाल उठाया जा सकता है।"

विउपनिवेशीकरण का मतलब बस एक निश्चित ''प्रजाति'' के लोगों को दूसरी ''प्रजाति'' के लोगों द्वारा प्रतिस्थापित करना है। संक्रमण की किसी अवधि के बिना, एक पूर्ण, संपूर्ण और निरपेक्ष प्रतिस्थापन होता है।

उपनिवेशवाद के उन्मूलन का नग्न सत्य हमारे लिए उससे निकलने वाली जलती हुई गोलियों और खून से सने चाकुओं को याद दिलाता है। क्योंकि यदि अंतिम प्रथम होगा, तो यह केवल दो नायकों के बीच एक जानलेवा और निर्णायक संघर्ष के बाद ही घटित होगा।"

(फैनन **1961** पृ **65**)

वस्तुतः फैनन की मान्यता थी कि हिंसा ही उपनिवेशवाद का मुख्य उपकरण है हिंसा के माध्यम से उपनिवेशों की स्थापना होती है और हिंसा के माध्यम से ही उपनिवेश बनाए रखे जाते हैं हिंसा के माध्यम से ही मूल निवासियों का शोषण होता है। इसलिए उपनिवेशवाद से मुक्ति का आधार भी हिंसा ही है । उनकी दोनों पुस्तकों में हिंसा का यह महिमा मंडल बारंबार दिखता है । इसका मुख्य कारण यह है कि फैनन राजनीतिक व्यवस्था में परिवर्तन नहीं चाहते बल्कि वह उपनिवेशवादी राजनीतिक व्यवस्था को नष्ट करना चाहते हैं। उनकी मान्यता है की व्यवस्था के समूल नाश के बिना मूल निवासियों की मुक्ति सम्भव नहीं है । यदि राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन सफल हो गया और उपनिवेशवादी बुर्जआ बने रहे, उनकी संस्थाएं बनी रही तो वैसी स्वतंत्रता और वैसी राष्ट्रीय मुक्ति कभी भी सफल नहीं हो सकती इसलिए हिंसा के द्वारा उनका समूल नाश आवश्यक है ।

"हिंसा जिसने औपनिवेशिक दुनिया के क्रम पर शासन किया है, जिसने देशी सामाजिक रूपों के विनाश के लिए निरंतर ताल बजाई है और अर्थव्यवस्था के संदर्भ की प्रणालियों, पोशाक के रीति–रिवाजों और बाहरी जीवन को बिना किसी आरक्षण के तोड़ दिया है, वही हिंसा उस समय देशी द्वारा दावा की जाएगी और उस पर कब्जा कर लिया जाएगा, जब वह अपने व्यक्तित्व में इतिहास को मूर्त रूप देने का फैसला करता है, निषिद्ध तिमाहियों में बढ़ता है। औपनिवेशिक दुनिया को नष्ट करना अब से कार्रवाई की एक मानसिक तस्वीर है (फैनन **1971** पृ **40**) "

सम्पूर्ण परिवर्तन

फैनन हिंसा को इतना अधिक महत्व इसलिए देते हैं कि वह व्यवस्था में संपूर्ण परिवर्तन चाहते हैं । उनकी दृष्टि में राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन संपूर्ण परिवर्तन का आंदोलन है यह केवल विदेशियों को भगाने का आंदोलन नहीं है । केवल फ्रांसीसियों को भाग देने से राष्ट्रीय मुक्ति नहीं प्राप्त होगी बल्कि पुरानी व्यवस्था का समूह नाश करके नवीन व्यवस्था का आगमन होगा और उसकी स्थापना होगी, उसके बिना राष्ट्रीय मुक्ति सफल नहीं है। इसलिए वह उपनिवेशवाद के खात्में की बवृहत्तर योजना देते हैं ।

"इसका असामान्य महत्व यह है कि यह पहले दिन से ही उपनिवेशित लोगों की न्यूनतम मांगों का गठन करता है। सच कहें तो सफलता का प्रमाण नीचे से ऊपर तक पूरे सामाजिक ढांचे में बदलाव में निहित है। इस बदलाव का असाधारण महत्व यह है कि यह इच्छाशक्ति, आह्वान और मांग से प्रेरित है। इस बदलाव की आवश्यकता अपनी अपरिष्कृत अवस्था में, आवेगपूर्ण और बाध्यकारी रूप में, चेतना और मन में मौजूद है।" (फैनन **1961** पृ **36**)

निष्कर्ष

फैनन ने अपनी दोनों पुस्तकों में उपनिवेशवाद और उसकी प्रकृति का जो चित्र खींचा है उसके कई आवश्यक निहितार्थ निकलते हैं । इसमें सबसे महत्वपूर्ण जो निहितार्थ है , और वह राजनीतिक चिंतन को फैनन का सबसे

बड़ा योगदान भी है कि वह उपनिवेशवाद का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण कर भाषा को उपनिवेशवाद के उपकरण के रूप में स्थापित करते है । फैनन ने बहुत ही सफलतापूर्वक दार्शनिक स्तर पर इसे स्थापित किया की भाषा केवल संप्रेषण और अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं है बल्कि भाषा संस्कृति का वाहक है। दूसरे शब्दों में यदि यह कहा जाए की संस्कृतियां भाषा प्रस्तुत होती हैं तो अतिशयोक्ति नहीं होगी । इसलिए भाषा को नष्ट करना संस्कृ ति को नष्ट करने के बराबर है । फैनन यह बताते हैं कि किस प्रकार उपनिवेशवादी भाषा के माध्यम से उपनिवेशवाद का पूरा सुपरस्ट्रक्चर तैयार करते हैं और भाषा के नाश से मूल निवासियों के संस्कृति का नाश कर उनमें एक प्रकार की हीन भावना आरोपित करने में सफल होते हैं । इसलिए भाषा के मनोविज्ञान के आधार पर उन्होंने उपनिवेशवाद को व्याख्या करने की सफल कोशिश की ।

इसके अतिरिक्त उपनिवेशवाद की प्रकृति को व्याख्यायित करने में उन्होंने हिंसा को अत्यधिक महत्व दिया । किसी भी उदारवादी विश्लेषक और चिंतक के लिए मुश्किल है कि वह हिंसा का समर्थन करें , लेकिन उन्होंने जिस प्रकार से हिंसा को एक उपकरण के रूप में प्रस्तुत किया उसने लेटिना अमेरिका अफ्रीका और एशिया के साम्यवादी क्रांतिकारियों को एक रास्ता दिखाया । चेग्वेरा जैसे अनेक चिंतक हुए जिन्होंने गोरिल्ला युद्ध पद्धति के नियामक के रूप में फलन को स्वीकार किया । यह फैनन की बहुत गंभीर आलोचनीय असंगति है संगति है । हिंसा किसी भी स्तर पर किसी भी तरीके से महिमा मंडित नहीं की जानी चाहिए । अच्छा होता है यदि फैनन के साथ–साथ नीग्रो आंदोलन में कोई महात्मा गांधी भी पैदा होता जो राष्ट्रीय मुक्ति के लिए हिंसा की बजाए अहिंसा को आधार बनाता। इसलिए फैनन की हिंसावादी रणनीति और चिंतन का समर्थन करना कठिन है । तथापि फैनन बीसवीं शताब्दी के शह नव मार्क्सवादी चिंतक है जिन्होंने बहुत अल्प आयु में ही अपने किसी भी पूर्ववर्ती मार्क्सवादी की तुलना में व्यवहारिक मार्क्सवादी आंदोलनो को सबसे अधिक प्रभावित किया और राजनीतिक चिंतन पर अपनी अमिट छाप छोड़ी ।

संदर्भ

1– फैनन एफ (**1952**) : ब्लैक स्किन, व्हाइट मास्क (प्यू नोयर, मास्क ब्लैंक्स)

2– फैनन एफ (**1961**) : द व्रीच्ड ऑफ द अर्थ (लेस डैमनेस डे ला टेरे)